

डॉ. डेविड इमानुएल, सत्र 5, निर्गमन भजन 135

© 2024 डेविड इमानुएल और टेड हिल्डेब्रांट

यह निर्गमन स्तोत्रों पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड एमानुएल हैं। यह सत्र संख्या पाँच, भजन 135, प्रभु की सर्वोच्चता है।

ठीक है। अब हम अंतिम स्तोत्र पर आते हैं जिसे हम देखेंगे। हमने यह यात्रा भजन 136 को देखते हुए शुरू की थी। अब हम पूरा चक्र पूरा कर चुके हैं और हम अंतिम भजन 135 पर पहुँच गए हैं, जिसे मैंने या जिसे मैंने कहा है, प्रभु की सर्वोच्चता।

तो, हमारे पास यहां ऐसे नोट्स हैं जो आपको एक सुराग देंगे, मूल रूप से प्रशंसा का एक भजन, जिसे गुंकेल प्रशंसा के भजन के रूप में परिभाषित करता है। इसलिए, यदि आप अब तक हमारे द्वारा देखी गई सभी शैलियों, विभिन्न शैलियों के संदर्भ में सोचते हैं, तो हमने भजन 136 देखा है, जो एक प्रकार का स्तुति गान है। लेकिन फिर हमने भजन 78 देखा है, जो कुछ-कुछ विलाप जैसा या ज्ञान भजन जैसा है।

हमने भजन 105 में प्रशंसा का एक और भजन देखा है जो बहुत अनोखा और अलग है। हमने एक विलाप देखा है, भजन 106 के साथ एक निश्चित विलाप। इसलिए, निर्गमन स्तोत्र में से कोई भी नहीं, हम यह नहीं कह सकते कि सभी निर्गमन स्तोत्र एक विशेष शैली हैं, लेकिन वे शैलियों को पार करते हैं और यह ठीक है।

वह ठीक है। निर्गमन सामग्री इतनी अधिक नहीं है और यह इस विशेष स्तोत्र में संक्षिप्त है। परन्तु भजनहार ने जिस प्रकार इसका प्रयोग किया है वह विशेष है।

यह व्यक्तिगत है और जो हमने पहले देखा है उससे थोड़ा अलग है। इस विशेष स्तोत्र में निर्गमन का प्राथमिक उपयोग ईश्वर की सर्वशक्तिमानता को प्रदर्शित करने का एक साधन है। आप अन्य मूर्तियों की नपुंसकता के संबंध में विशेष रूप से देखेंगे।

तो, सीधी तुलना है। हम एक पल में देखेंगे कि यह कैसे काम करता है, लेकिन भगवान की शक्ति और वह क्या कर सकता है और अन्य मूर्तियों की नपुंसकता के बीच सीधी तुलना है। एक और चीज़ जो इस भजन को अद्वितीय बनाती है वह यह है कि यह बाइबिल साहित्य पर अत्यधिक निर्भर है।

मुझे नहीं लगता कि इस पाठ में एक भी छंद ऐसा है जो बाइबिल साहित्य में किसी अन्य स्थान से जुड़ा न हो। तो यह कुछ ऐसा है जिसे आप देखने जा रहे हैं और हमने इसे पहले नहीं देखा है। केवल इसी कारण से, इस बात का प्रबल संकेत है कि यह भजन अपेक्षाकृत देर से आया है।

प्रशंसा के एक भजन के रूप में, भजन 105 की तरह, आप भी पाएंगे कि यह एक अपेक्षाकृत सकारात्मक विषय है, और इज़राइल जो कुछ भी नकारात्मक करता है उसे बड़े पैमाने पर छोड़ दिया गया है। संरचना को देखते हुए, हम एक परिचय से शुरू करते हैं, जिसमें आपको आम तौर

पर स्तुति का एक भजन मिलता है जिसमें गीत लोगों को भगवान की स्तुति करने और एक समुदाय के रूप में एक साथ आने के लिए आमंत्रित करता है। फिर हमारे पास सृष्टि और निर्गमन में ईश्वर की सर्वशक्तिमानता का वर्णन है।

हमने पहले देखा है कि दोनों विषय जुड़े हुए थे। जब हम निर्गमन को खोजते हैं, तो हमें अक्सर सृजन भी मिलेगा। हमने पाया कि कुछ विवरणों में, भगवान द्वारा समुद्र को डांटने का वर्णन एक छवि है जो हमें सृष्टि कथा में मिलती है।

भजन 105 में, यह एक ऐसा मामला है जहां उस विशेष भजन में सृष्टि का कोई सबूत नहीं है। लेकिन अगर हम भजन 104 की ओर एक कदम पीछे जाएं, तो आप पाएंगे कि 104 वास्तव में एक सृजन भजन है। तो, यह सीधे निर्गमन सामग्री तक ले जाता है।

जैसा कि मैं उस विषय पर हूं, उन तीन स्तोत्रों पर एक संक्षिप्त नज़र डालना सार्थक है जिन पर हमने अभी पहले चर्चा की है। जैसा कि मैं अभी यहां हूं, भजन 104, 105 और 106। यदि आप उन्हें एक साथ देखेंगे, तो आप देखेंगे कि 100 सृष्टि को कवर करता है।

फिर हम चलते हैं, जैसा कि हमने इब्राहीम से वादा किए गए देश में प्रवेश तक देखा है। यहां हम तीन समुद्रों को पार करने से लेकर निर्वासन तक जाते हैं। इसलिए जब आप इन स्तोत्रों को एक साथ देखते हैं, तो आपके पास सृजन से लेकर निर्वासन तक के इतिहास का सारांश होता है।

तो वह बस यूँ ही था। सृष्टि और निर्गमन में ईश्वर की सर्वशक्तिमानता। फिर हमारे पास एक छोटा सा प्रशंसा मध्यांतर है, दो छंद जो वास्तव में किसी भी प्रकार की ऐतिहासिक घटना के बारे में बात नहीं करते हैं, लेकिन वे परिचयात्मक प्रशंसा को याद करते हैं।

फिर आपके पास देश की मूर्तियों, चांदी और सोने की नपुंसकता और उनके द्वारा गढ़े गए आकारों की नपुंसकता का वर्णन है, और ये चीजें मूल रूप से कितनी बेकार हैं। फिर अंत में, श्लोक 19 से 21 में स्तुति करने का उपदेश है। संरचना, हम भजन को इस विशेष तरीके से विभाजित कर रहे हैं।

आप देखेंगे कि आरंभिक परिचय और प्रशंसा के प्रोत्साहन के बीच कुछ हद तक पत्राचार है। प्रशंसा का यह विचार उन दोनों का है। वे दोनों इस वाक्यांश का उपयोग करते हैं, हललूजाह।

इसलिए अधिक महत्वपूर्ण बात ईश्वर की सर्वशक्तिमानता के बीच की तुलना है, जो सीधे राष्ट्र की मूर्तियों की नपुंसकता से मेल खाती है। तो वह तुलना मजबूर है और केंद्र में, हमारी प्रशंसा मध्यांतर है। हम बस एक क्षण में इसके बारे में बात करने जा रहे हैं।

तो, हमें प्रशंसा का परिचय मिल गया है। हमें प्रभु की स्तुति प्राप्त हुई है। अब यह उन पालतू जानवरों में से एक और है।

वह इस ओर भी जुड़ गया है। हमें हिब्रू वाक्यांश मिला है, हललूजाह, जिसका शाब्दिक अर्थ है प्रभु की स्तुति करना। लेकिन आपको अनुवादों में भिन्नताएँ दिखाई देंगी।

कुछ लोग वास्तव में हलैलूजाह शब्द को एक शब्द के रूप में लिखते हैं। अन्य लोग इसे विभाजित करने का प्रयास करते हैं जैसा कि मैंने यहां यह दिखाने के लिए किया है कि हमारे पास इस वाक्यांश में क्या है, जो मुझे लगता है कि एक बहुत ही महत्वपूर्ण, एक शक्तिशाली वाक्यांश है, हमारे पास हिब्रू में दो शब्द हैं जो एक साथ जुड़े हुए हैं, जो वास्तव में हो सकते हैं कुछ-कुछ हलैलूजाह जैसा दिखें। तो, हमारे पास यहां हैलैल, यह शब्द है, जो एक अनिवार्य है, जो एक आदेश की तरह है जो आपको याह की स्तुति करने या उसके बारे में घमंड करने, प्रभु के बारे में घमंड करने के लिए कहता है।

तो, यह सिर्फ एक शब्द नहीं है जो आप कहते हैं। वास्तव में, यह एक ऐसा शब्द है जो लोगों को भगवान की स्तुति करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। अलग-अलग जगहों पर इसका अनुवाद अलग-अलग होता है।

प्रभु की स्तुति करो, उसका भजन गाओ। यहोवा ने याकूब को अपने लिये, और इस्राएल को अपनी निज भूमि के लिये चुन लिया है। यहाँ एक बहुत ही महत्वपूर्ण शब्द है, सेगुला ।

वे एक अम सेगुला हैं , एक लोग जो एक विशेष अधिकार हैं। यदि आप एक्लेसिएस्टेस की पुस्तक पर जाएं, तो यह इस शब्द का उपयोग करता है जो एक विशेष खजाने के बारे में बात करता है जो आपके पास होगा और जिसे आप अलग रख देंगे, जो आपकी निजी संपत्ति है। मूलतः सेगुला का विचार यही है।

तो, यह कोई कब्ज़ा नहीं है, बल्कि यह एक बहुत ही खास कब्ज़ा है। यह निर्गमन के इस अंश से जुड़ता है। यह केवल आपको यह दिखाने के लिए है कि इन अलौकिक कृत्यों पर एक्सोडस रूपांकनों का संबंध आवश्यक रूप से नहीं है।

लेकिन यहां हमें एक संबंध मिला है, एक अनुबंध संबंध, जहां भगवान कहते हैं, यदि तुम मेरी बात मानोगे और मेरी वाचा का पालन करोगे, तो तुम मेरी अपनी संपत्ति हो जाओगे। तब तुम सेगुला हो जाओगे शाली , मेरा सेगुला , जो राष्ट्रों के बीच से मेरी विशेष संपत्ति है। इसलिए केवल अनुवाद को अपने पास रखना, शायद मुझे लगता है कि यह उस विशेष शब्द की ताकत और वजन के प्रति थोड़ा सा नुकसान है।

लेकिन यह वैसा ही है जैसा मैं महसूस करता हूं। एक बार फिर, आपको एलोहीम मिल गया है। जब आपको यह मिल गया, तो हमने इस भगवान या देवताओं से शुरुआत की।

कि प्रभु, अडोनाई महान है और हमारा प्रभु, अडोनाई सभी देवताओं से ऊपर है, सभी एलोहीम से ऊपर है। यह फिर से वह शब्द है, जो इस्राएल के परमेश्वर को संदर्भित नहीं करता है, बल्कि यह अन्य देवताओं या राष्ट्रों की मूर्तियों को संदर्भित करता है। यह, जब हम भजन की प्रस्तावना पढ़ते हैं, तो हमें अपनी इंद्रियों को ऊपर उठाना चाहिए।

पहले जब हम कुछ भजनों का परिचय पढ़ते थे, तो हम भजन 105 का परिचय पढ़ते थे। हम भजन 78 का परिचय भी पढ़ते थे। उन दोनों भजनों में, भजन का परिचय देने के लिए, हमारे पास निफलाहोट शब्द था।

मैंने उसका उल्लेख किया या गेडोलोट, जो यह चमत्कारी भाषा थी। परिचय में भी, जो आपको बताता है वह यह है कि यह आपको संकेत देता है कि भजन में क्या आने वाला है। हम गेडोलोट पर चर्चा करने जा रहे हैं, भजन में अडोनाई के निफलाहोट वास्तव में क्या हैं।

तो, यहाँ इसका एक संकेत है। इस मामले में यहाँ, हमने पाया है कि ईश्वर एक महान ईश्वर है और हमारा ईश्वर सभी देवताओं से ऊपर है। यहां भी, हमें एक समान संकेत और एक समान कुंजी मिली है।

भजनकार कह रहा है, अरे, मैं इसी के बारे में बात करने जा रहा हूँ। मैं जो कह रहा हूँ उसका मुख्य विषय यही है। हमारा परमेश्वर अन्य सभी देवताओं से बड़ा है।

यदि आप नहीं जानते कि कैसे, तो पढ़ते रहें और आपको पता चल जाएगा। मैं आपको यह समझाने जा रहा हूँ। तो, आपको भजन की प्रस्तावना में मूल विषय स्थापित हो गया है।

यहीं नहीं ऐसा अक्सर होता रहता है। सुराग होंगे, संकेत होंगे, जो हो रहा है उसका संकेत होगा। तो अब हम ईश्वर की सर्वशक्तिमानता, ईश्वर की महानता के इस खंड पर आते हैं।

सर्वशक्तिमानता के उदाहरण हम सबसे पहले सृष्टि में देखते हैं। अब जब हम सृजन के बारे में सोचते हैं, तो कई बार हमारे मन में, आधुनिक व्यक्ति के मन में, सृजन एक ऐसी घटना है जो छह दिनों, छह समयावधियों में घटती है। पूरी स्थिति के धर्मशास्त्र में प्रवेश करना मेरा काम नहीं है, लेकिन बाइबिल के अनुसार, यह कहता है कि यह छह दिनों में होता है।

लेकिन लोग सृष्टि को उसी काल में घटित होते हुए देखते हैं। भगवान नीचे आए, उन्होंने दुनिया बनाई, मानव जाति बनाई और फिर वह एक कदम पीछे हट गए और वह वापस चले गए। मैंने पहले इसका उल्लेख किया था।

कुछ लोगों का मानना है कि जब वह इस शाश्वत विश्राम में विश्राम कर रहे होते हैं, तब वह प्रकृति की शरण में जाते हैं और उनके लिए चीजें चलाते हैं। सृजन का यह विचार, यह सृजन की बाइबिल संबंधी धारणा नहीं है। सृष्टि के बारे में बाइबिल की धारणा यह है कि ईश्वर दुनिया बनाता है और वह चीजों को बदलता रहता है।

वह बारिश भेजना जारी रखता है। वह सूरज को भेजना जारी रखता है। वह फसलें, पेड़-पौधे उगाना जारी रखता है।

वह दुनिया में सक्रिय और शामिल रहता है। उन्होंने एक कदम भी पीछे नहीं हटाया है। इसलिए, जब हम ईश्वर को पृथ्वी के छोर से वाष्पों को ऊपर उठाने के लिए प्रेरित करते हुए देखते हैं, तो यह सृजन का एक कार्य है।

वह संसार को गतिशील रखता है। वह इस संसार और इस ग्रह के संचालन और प्रबंधन में निरंतर संलग्न रहता है। तो, हमें सृष्टि में सर्वशक्तिमानता मिली है और उसके बाद निर्गमन में सर्वशक्तिमानता एक उलटे क्रम की तरह है, यहाँ थोड़ा उलटा क्रम है।

पहली बात जो इसमें उल्लेखित है वह मिस्र में मनुष्य और जानवर दोनों के पहिलौठों को मारना है। फिर यह कहता है कि उसने तुम्हारे बीच चिन्ह और चमत्कार भेजे। ठीक है, यदि आप चाहें तो पहले उसने संकेत और चमत्कार किये।

उसने अन्य विपत्तियाँ डालीं और फिर उसने पहिलौठे को जन्म दिया, परन्तु पहिलौठे का उल्लेख पहले किया गया है। हमारे पास फिरौन और उसके नौकरों का भी उल्लेख है, जो याद दिलाता है कि हमने भजन 136 में सबसे पहले क्या किया था। अब इन दोनों भजनों के बीच का संबंध काफी खास है और मैं इस पर थोड़ी देर बाद चर्चा करूंगा।

तो, यह फिर से कहता है, एक सारांश कथन, उसने कई राष्ट्रों को हराया और शक्तिशाली राजाओं को मार डाला। उदाहरण के लिए, हमारा ध्यान फिर से ट्रांसजॉर्डन क्षेत्र पर है जहाँ वह एमोरियों के राजा सीहोन और बाशान के राजा ओग की बात करता है। तो, अब तक देजा वु की भावना आ जानी चाहिए क्योंकि हमने इसे भजन 136 में सुना है।

इन सबके परिणामस्वरूप, क्योंकि वह सृष्टि का स्वामी है और सृष्टि को चलाता है, वह भूमि को अपने लोगों, इज़राइल को विरासत के रूप में वितरित करने में सक्षम और योग्य है। वह बिल्कुल यही करता है। एक बार फिर, आप यहां अधिक स्पष्ट रूप से देख सकते हैं, सीढ़ीदार पैटर्न उन्होंने अपनी जमीन विरासत के रूप में दी थी।

तो, आपको यहाँ एक विरासत दोहराई गई है, इज़राइल, उसके लोगों के लिए एक विरासत। फिर से, ये शब्द पिछले भजन के साथ घंटी बजाएंगे, इसमें कोई संदेह नहीं है। कई मायनों में, जैसा कि हम भजन के इस खंड को देखते हैं, हमें इसे एक दिव्य सारांश के रूप में समझने की आवश्यकता है।

भजनहार जो कर रहा है वह इस्राएल के परमेश्वर की तस्वीर चित्रित कर रहा है। यह भगवान कौन है? वह क्या करता है? खैर, यहाँ उसका बायोडाटा है। वह दुनिया चलाता है।

वह अपनी प्रजा के लिये राजाओं को मारता है, और अपनी प्रजा के लिये भूमि बांटता है। हमारा परमेश्वर यही करता है। यह वह है जो वह है उसी तरह हमारे पास एक बायोडाटा होगा जो बताता है कि हमने अपने जीवन में क्या किया है और हम कौन हैं।

तो हमारे पास इस विशेष बिंदु पर दिव्य बायोडाटा रखा हुआ है। फिर हम एक स्तुति मध्यांतर की ओर बढ़ते हैं जो बोलता है, हे भगवान, आपका नाम शाश्वत है। हे यहोवा, तेरा स्मरण पीढ़ी पीढ़ी तक बना रहेगा, क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा का न्याय करेगा, और अपने दासों पर दया करेगा।

यह बहुत कुछ है, जैसा कि मैंने पहले उल्लेख किया है, एक साहित्यिक झुकाव। यह भजन के मध्य में आता है। हमारा परिचय हो चुका है।

हमारे पास भगवान का बायोडाटा है। हम अभी इंतजार कर रहे हैं इससे पहले कि हम जाएं और देवताओं, राष्ट्रों की मूर्तियों के बायोडाटा को देखें। इस मामले में, हमें न्यायाधीश शब्द मिला है, क्योंकि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा।

अभिव्यक्ति न्यायाधीश के विभिन्न अर्थ हैं। यह उस चीज़ को बांटने का विचार है जो अच्छे लोगों के लिए अच्छा है और जो बुरे लोगों के लिए सज़ा है। इसलिए, जब प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा, तो वह केवल न्याय कर सकता है, यदि धर्मी हो तो यह केवल एक सकारात्मक कार्य है।

आप मान लेंगे कि भजनहार यह मान रहा है कि उसके लोग धर्मी हैं क्योंकि यदि प्रभु अपने लोगों का न्याय करेगा, तो यह उनका न्याय करने के लिए इतना नहीं है जितना कि उन्हें दोषमुक्त करने के लिए है। आप धर्मात्मा हैं और इसलिए मैं आपको ये सभी सकारात्मक चीज़ें देने जा रहा हूँ। इसलिए, यह स्वागत योग्य बात है।

लेकिन यदि आप अपने दुश्मनों का न्याय करना चाहते हैं, तो आप जानते हैं कि वे गलत कर रहे हैं और इसलिए उन्हें सज़ा दी जाएगी। नाम का विचार, आपका नाम, यह वापस जाता है, श्लोक एक की याद दिलाता है। यह कहता है कि हे प्रभु, तेरा नाम अनन्त है।

इस संदर्भ में हिब्रू नाम का विचार किसी की प्रतिष्ठा का विचार है। यह उसकी प्रतिष्ठा है, वह चीज़ें जो आप केवल ईश्वरीय नाम के संदर्भ में सोचने के बजाय करते हैं। इसमें वह सब कुछ है जो इसके लिए जिम्मेदार है, वह शक्ति जो इसके पीछे है, अधिकार, वह सर्वशक्तिमानता जो इसके पीछे भी है।

तो अब हम मूर्तियों, राष्ट्रों की मूर्तियों के बायोडाटा की ओर मुड़ते हैं। यहां संरचना के माध्यम से, जैसा कि मैंने आपको पहले दिखाया था, तुलना सीधे भगवान से है और भगवान क्या कर सकते हैं। राष्ट्रों की मूर्तियों में मूलतः विशेषताएं तो होती हैं, लेकिन कोई कार्य नहीं।

उनमें विशेषताएं तो हैं, लेकिन कोई कार्य नहीं। यह सीधी तुलना में है क्योंकि यदि आप इज़राइल के ईश्वर को जानते हैं, तो उसके पास कोई विशेषताएं नहीं हैं, बल्कि वह सभी कार्य करता है। वह सामान बनाता है, लेकिन कोई नहीं जानता कि वह कैसा दिखता है।

किसी के पास उसकी कोई छवि नहीं है, जो इन अन्य मूर्तियों के साथ जो हो रहा है उसके बिल्कुल विपरीत है। वे चांदी और सोने से बने हैं, यहां एक दिलचस्प समावेश है। हमने भजन 105 में मिस्र के साथ एक को देखा, लेकिन यहां हमारे पास मुंह वाला एक है।

उनके मुँह तो हैं, परन्तु वे बोलते नहीं। उनके पास आँखें तो हैं, परन्तु वे देखते नहीं। उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुनते नहीं, और न उनके मुँह से सांस चलती है।

राष्ट्रों के देवताओं का उनके चेहरे की विशेषताओं के बारे में वर्णन है। तो यह एक समूह या विशेषताओं की एक विशेष श्रृंखला को सम्मिलित करने का एक तरीका है जिसे समावेशन कहा जाता है। इससे आप मान लेंगे कि इस स्तोत्र का उद्देश्य वास्तव में मूर्तिपूजा को हतोत्साहित करना है।

कहने का तात्पर्य यह है कि यदि आप इस भजन को पढ़ते हैं, तो आप कह रहे हैं कि हमारा भगवान महान है, लेकिन फिर मूर्तियों की पूजा क्यों करें? वे कुछ नहीं करते। इसलिए, यह काफी नकारात्मक है और अन्य देशों के देवताओं के संबंध में यह काफी अपमानजनक है। इसलिए, यह लोगों को अन्य मूर्तियों की ओर जाने से रोकने के लिए है।

हमारे पास यहां जो अंतिम खंड है वह एक समूह उपदेश है जिसमें मंदिर के भीतर विभिन्न समूह हैं, यह माना जाता है कि वहां अलग-अलग समूह और अलग-अलग गायक-मंडलियां रही होंगी। ऐसा होता, यह मानते हुए कि इसका पाठ मंदिर में किया गया होता, उन्हें भगवान को आशीर्वाद देने के लिए प्रोत्साहित किया जाता। तो, आपके पास हारून का घर है, लेवी का घर है, जो प्रभु का सम्मान करते हैं, मूल रूप से ईश्वर से डरने वाले हैं।

जो लोग भगवान से डरते हैं, उनका वर्णन संभवतः बेहतर है। तो फिर आपको यह सामान्य आशीर्वाद मिल गया है। तो, हमें मंदिर में विभिन्न समूहों के साथ एक प्रकार की मंदिर सेटिंग मिली है।

हमें प्रभु की स्तुति मिली है, जिसका उल्लेख यहां किया गया है। यह एक और समावेशन है जहां भजन मूल रूप से शुरू होता है और हललुजाह शब्दों के साथ समाप्त होता है। तो यह भजन में मौजूद हर चीज़ को समाहित करता है।

यह प्रशंसा का गीत है और शुरुआत और अंत में एक ही तरह से गाया गया है। जैसा कि पहले उल्लेख किया गया है, इस स्तोत्र के बारे में बहुत अनोखी बात यह है कि यह अन्य बाइबिल ग्रंथों पर अत्यधिक निर्भर है, न कि केवल इस अर्थ में कि यह अन्य सामग्री की ओर इशारा करता है। यह उससे कहीं अधिक गंभीर है।

कुछ अर्थों में, यदि आप मुझे इतना मूर्ख होने की इजाजत देते हैं कि मैं इसे इस तरह नाम दे सकता हूं, तो यह एक प्रकार का फ्रेंकस्टीन भजन है जिसमें यह एक ऐसा भजन है जिसे लगभग कई अन्य भजनों के अतिरिक्त भागों से एक साथ रखा गया है। इसके बावजूद, भजनहार अभी भी इसे बनाने और इसे अपने काम में बहुत सावधानी से आकार देने में सक्षम है। तो, आइए इस स्तोत्र में साहित्यिक उधार के कुछ और क्रूर उदाहरणों पर एक नज़र डालें।

यहां देखें तो ये दो ग्रंथ हैं। यह भजन 135.7 है और यह यिर्मयाह 10.13 है। वही पृथ्वी की छोर से धुप को ऊपर उठाता है, वही वर्षा के लिये बिजली चमकाता है, और अपने भण्डार से पवन निकालता है। वह पृथ्वी की छोर से बादल बरसाता है, वर्षा के लिये बिजली बनाता है, और अपने भण्डारों से पवन निकालता है।

ये दो अंश हैं। अब, एक बार फिर, मैं अपने पालतू जानवर के पास वापस जा रहा हूँ। यहां हिब्रू शब्द, काल में बदलाव के अलावा, बिल्कुल वैसा ही है।

फिर भी नाज़बी ने यहां वाष्प और यहां बादलों का अनुवाद करना देखा है, भले ही यह बिल्कुल एक जैसा है। मैं जानता हूँ कि यह महत्वपूर्ण नहीं है, लेकिन यह अब भी मुझे परेशान करता है कि यदि भजनहार ने शब्दों को एक स्थान से दूसरे स्थान पर कॉपी करने में इतनी सावधानी बरती है, तो अनुवादक वही काम क्यों नहीं कर सकते? यहां वास्तव में कोई बदलाव नहीं होना चाहिए, लेकिन यह किसी और दिन के लिए है। तो हम इस बच्चे को देखते हैं, यह सटीक नकल है, सिवाय इसके कि जहां एक कृदंत है, जिसे एक va'iktol , एक vav प्लस अपूर्ण रूप के लिए बदल दिया गया है।

इसके अलावा, यह बिल्कुल वही शब्द है जो इस विशेष स्थान में उपयोग किया गया है। आइए यहां इस उदाहरण को देखें। श्लोक 14, व्यवस्थाविवरण 32, 36, क्योंकि यहोवा अपनी प्रजा का न्याय करेगा, और अपने दासों पर दया करेगा।

एक बार फिर, हमारे पास न्यायाधीश है, मिशपत , यह एक ही शब्द है, लेकिन हमारे पास यहाँ प्रतिशोध है , लेकिन किसी भी कारण से यहाँ दो स्थानों पर न्यायाधीश हैं। हो सकता है कि जिन लोगों ने व्यवस्थाविवरण का अनुवाद किया वे टोरंटो में थे और जिन लोगों ने भजन का अनुवाद किया वे टेक्सास में थे और उन्होंने कभी बात नहीं की। लेकिन भजनहार ने जानबूझकर नकल और उधार लिया है, जो अनुवाद संबंधी मामले में थोड़ा गड़बड़ है।

लेकिन यहाँ शब्दांकन बिल्कुल वैसा ही है। तो इसे बस एक जगह से लिया जाता है और दूसरी जगह डाल दिया जाता है। हमारे पास यहां भजन 136 से एक और उदाहरण है।

तो, अब हम पूर्ण चक्र पर आ गए हैं। हमें ईश्वर का यह वर्णन मिलता है जिसने कई राष्ट्रों को नष्ट किया और शक्तिशाली राजाओं को मार डाला। हमने महान राजाओं को हराया है।

अब, यदि आप उसे अनदेखा करते हैं, क्योंकि उसकी प्रेम-कृपा सदैव बनी रहती है, तो आपको कुछ समानताएँ दिखाई देंगी। एमोरियों के राजा सीहोन, एमोरियों के राजा सीहोन, फिर इस पर ध्यान न दो। बाशान का राजा ओग, बाशान का राजा ओग, और उस ने उनका देश निज भाग करके दे दिया।

उसने उनकी भूमि को विरासत के रूप में दिया, इस्राएल को एक विरासत, इस्राएल को एक विरासत। तो, हम सटीक शब्द देखते हैं, जो दूसरे भजन से लिया गया है। इस मामले में, यह वह भजन होता है जो वास्तव में इसका अनुसरण करता है।

यदि यह पर्याप्त नहीं था, तो हम भजन श्लोक 15 और भजन 115.4 को देखने के लिए आगे बढ़ सकते हैं। और इस मामले में, हमें राष्ट्रों की मूर्तियाँ केवल चाँदी और सोने की मिली हैं। उनकी मूर्तियाँ चाँदी और सोने की हैं, जो मनुष्यों के हाथ की बनाई हुई हैं। उनके मुँह तो हैं, परन्तु वे बोल नहीं सकते।

उनके मुँह तो हैं, परन्तु वे बोलते नहीं। फिर, आइए उस बारे में बात न करें। उनके पास आँखें तो हैं, परन्तु वे देखते नहीं।

उनके पास आँखें तो हैं, परन्तु वे देख नहीं सकते। उनके कान तो रहते हैं, परन्तु वे सुनते नहीं। उनके कान तो हैं, परन्तु वे सुन नहीं सकते।

उन्हें बनाने वाले उनके जैसे ही होंगे। बनाने वाले ऐसे बनेंगे। हाँ, हर कोई जो उन पर भरोसा करता है, हर कोई जो उन पर भरोसा करता है।

भजन 135, वही शब्द है जो दूसरे भजन से लिया गया है। और इसलिए, हम देखते हैं कि यही कारण है कि मैं इसे फ्रेंकस्टीन भजन के रूप में वर्णित करूँगा क्योंकि भजनकार स्पष्ट रूप से इन सभी व्यक्तिगत स्थानों से शब्द उधार ले रहा है। यह मामला खत्म नहीं है क्योंकि इसमें और भी बहुत कुछ है।

हमारे पास हर विवरण में जाने का समय नहीं है। ये सबसे स्पष्ट उदाहरण हैं, लेकिन यह स्पष्ट है कि वह सामग्री उधार ले रहा है। इससे भी अधिक अजीब बात यह है कि निर्गमन की कुछ सामग्री, वह इसका उपयोग करने के लिए निर्गमन पर वापस नहीं गया है।

वह एक और स्तोत्र का उपयोग कर रहा है। तो, वह वैसा ही है जैसा हमने पहले उदाहरण में देखा था जहाँ भजनहार ने निर्गमन 15 से एक काव्यात्मक उदाहरण और गद्य उदाहरण उधार लिया था। यहाँ वह अपने काम को बनाने में मदद करने के लिए एक और काव्य परंपरा की ओर जा रहे हैं।

लेकिन इसके बावजूद, वह इन पुराने टुकड़ों से कुछ नया, कुछ बहुत नया बनाता है। इसलिए भले ही हम इन स्पष्ट साहित्यिक संकेतों को देख सकते हैं, हमें इस सोच में नहीं पड़ना चाहिए कि किसी तरह यह एक सस्ता काम है जिसमें कोई रचनात्मकता नहीं है क्योंकि जिस तरह से उन्होंने आदेश दिया है उसमें अभी भी बहुत रचनात्मकता है उसके हिस्से। तो, संक्षेप में, हम इस स्तोत्र को संक्षेप में प्रस्तुत करने जा रहे हैं और फिर इसके बाद मैं निर्गमन स्तोत्र के बारे में जो कुछ भी सीखा है उसे समापन में समाप्त करने का प्रयास करने जा रहा हूँ।

पहली बात यह है कि हमारे पास निर्गमन स्तुति के भजन के रूप में है। यह फिर से भजन 105 की तरह प्रशंसा का एक भजन है, लेकिन यह भजन 105 से बहुत अलग है। कवर किया गया ऐतिहासिक काल वास्तव में काफी अलग है।

इसमें अन्य सामग्रियों का भी बहुत कुछ शामिल है, जैसे कि हमारे यहाँ मौजूद निर्माण सामग्री, साथ ही अन्य मूर्तियों के साथ इसकी सीधी तुलना भी है। तो हाँ, वे समान हैं, लेकिन हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि वे बहुत, बहुत अलग और बहुत अनोखे हैं, अगर मैं यह भी कह सकता हूँ। साथ ही इस स्तोत्र में हमारा कोई मध्यस्थ नहीं है।

हमारे पास मूसा का उल्लेख नहीं है। हम वहीं वापस आ गए हैं जहां से हमने शुरुआत की थी। हारून, इनमें से किसी भी व्यक्ति या इन इज़राइली नेताओं में से किसी का भी कोई स्पष्ट उल्लेख नहीं है।

ये सभी चीज़ें छोड़ दी गई हैं। भजन 136 की तरह, हम भगवान बनाम राजाओं के इस विषय को भी देख सकते हैं। यह निम्नलिखित स्तोत्र से उधार लिया गया है।

एक और कारण यह हो सकता है कि उन्हें एक दूसरे के साथ जोड़ा गया है, लेकिन यह निम्नलिखित भजन से उधार लिया गया है। हमारे पास फिरौन के राजाओं और ओग तथा सीहोन के एमोरियों के राजाओं का उल्लेख है कि परमेश्वर इन लोगों के साथ युद्ध करता है और उस अर्थ में अपने लोगों के लिए लड़ता है। यह सब उस ईश्वर को दिखाने के लिए है, यह उसकी शाश्वत दया और उसके शाश्वत प्रेम को प्रदर्शित करने के लिए नहीं है, जो कि पहले इस्तेमाल किया गया था।

लेकिन यहां यह उसकी शक्ति बनाम राष्ट्रों की मूर्तियों की शक्ति का प्रदर्शन है। फिर आखिरी बात जो हम इस स्तोत्र में भी देखते हैं वह यह है कि यह निर्गमन के साथ सृजन को मिश्रित करता है। यह दो चीज़ों को सीधे तौर पर एक साथ जोड़ता है।

मैंने पहले उल्लेख किया है कि वे दो विषय निर्गमन स्तोत्र और संपूर्ण बाइबल में अस्पष्ट रूप से जुड़े हुए हैं। तो यह भजन 135 को समाप्त करता है। तो, अब मैं जो करना चाहता हूं वह निर्गमन के सभी भजनों के कुछ अंतिम सारांश बिंदुओं को जल्दी से पढ़ना है।

मैं कुछ महत्वपूर्ण बातों पर जोर देना चाहता हूं जिन्हें हमें एक्सोडस स्तोत्र के भीतर, स्तोत्र के भीतर इसकी उपस्थिति को देखते समय वास्तव में समझने की आवश्यकता है। तो, कुछ सारांश बिंदु। सबसे पहले, यह याद रखना महत्वपूर्ण है कि जब मैंने शुरुआत की थी तो निर्गमन बाइबिल में सबसे प्रभावशाली बाइबिल परंपरा है।

सबसे प्रभावशाली परंपरा. यह बिल्कुल हर चीज़ में व्याप्त है। यह उत्पत्ति से चलता है।

मैंने पहले उल्लेख किया है, हमने इसका एक उदाहरण उत्पत्ति की पुस्तक में टुकड़ों के बीच मशाल के साथ देखा था। मैं और अधिक स्पष्ट हो सकता था और हम इब्राहीम के मिस्र जाने के बारे में बात कर सकते थे। यदि आप उस कहानी के बारे में सोचते हैं जब वह पहली बार अंदर जाता है, तो उत्पत्ति 12 में, जब इब्राहीम पहली बार मिस्र में जाता है, तो वह अकाल से बचने के लिए मिस्र में चला जाता है।

जब वह मिस्र में था, तब फिरौन ने उस पर अत्याचार किया। उस उत्पीड़न के माध्यम से, फिर उसे भगवान द्वारा बचाया जाता है। भगवान हस्तक्षेप करते हैं।

फिरौन के घराने पर विपत्ति आ गई और फिर उसे आज़ाद कर दिया गया। जब वह मिस्र छोड़ता है, तो वह अधिक चांदी और सोना लेकर मिस्र से निकलता है। तो इब्राहीम यही करता है।

यह इज़राइल का प्रत्यक्ष प्रतिबिंब है जो अकाल के कारण कनान छोड़कर मिस्र चला जाता है। मिस्र में रहते हुए, उन पर फिरौन द्वारा अत्याचार किया जाता है। ईश्वर हस्तक्षेप करता है, और फिरौन को कष्ट देता है, और परिणामस्वरूप, वे इब्राहीम की तरह, चांदी और सोने के साथ मिस्र छोड़ देते हैं।

तो, उत्पत्ति और निर्गमन में जो चल रहा है उसके बीच एक स्पष्ट दर्पण है। तो, इस अर्थ में, इब्राहीम के कार्य बाद में निर्गमन का पूर्वाभास देते हैं। यह प्रकाशितवाक्य की पुस्तक तक भी जाता है, जहां हम पृथ्वी पर भेजी जाने वाली विपत्तियों, टिड्डियों, मेंढकों का वर्णन पाते हैं, ये सभी चीजें एक्सोडस मूल भाव से आ रही हैं।

यह संपूर्ण बाइबिल में उपलब्ध है और इसलिए इसे स्तोत्र में पाया जाना बिल्कुल भी आश्चर्य की बात नहीं होनी चाहिए। अगली बात जो हमें जानने की ज़रूरत है वह यह है कि गद्य से कविता में स्पष्ट रूप से रूपांतरण हो रहा है। जब हम बाइबिल की हिब्रू कविता को देखते हैं, तो यह थोड़ी अधिक भड़कीली होती है।

यह थोड़ा अधिक अतिरंजित है। इसलिए गद्य कहानी को पुनः स्मरण करने या उसे काव्यात्मक कहानी में स्थानांतरित करने में एक आवश्यक परिवर्तन होना चाहिए। हम देख रहे हैं कि बदलाव हो रहा है।

हमने इसे कुछ भजनों की भाषा में देखा है। हमने इसे भजन 78 में देखा जहां चीजों को थोड़ा बढ़ा-चढ़ाकर पेश किया गया था। अन्य परंपराओं को याद किया गया।

तो, हमारे लिए स्वर्ग के दरवाजे खुल गए। हमारे यहाँ स्वर्गदूतों का भोजन लोगों द्वारा खाया जाता है। तो, यह एक तरह से गद्य को उसी प्रस्तुति के काव्यात्मक संस्करण में बदलने जैसा है।

यह समझना भी बहुत महत्वपूर्ण है कि पलायन विभिन्न शैलियों में होता है। यह किसी एक चीज़ तक सीमित नहीं है। यह भी कुछ है, कई ईसाई निर्गमन के विचार को मोक्ष के सरल अभ्यास तक सीमित रखते हैं।

यह बताता है कि हम कैसे पाप के गुलाम थे और कैसे हम अपने पाप से मुक्त होकर किसी और चीज़ में बदल गए। यह निर्गमन का केवल एक उपयोग है, लेकिन यह कई अलग-अलग तरीकों से प्रकट होता है और इसका उपयोग स्तोत्र में और वास्तव में बाइबिल के बाकी हिस्सों में कई अलग-अलग तरीकों से किया जाता है। तो, तथ्य यह है कि यह विभिन्न शैलियों में दिखाई देता है, यह उस तरीके का प्रतिबिंब है जिसमें इसका अलग-अलग उपयोग किया जाता है।

शायद सबसे महत्वपूर्ण है निर्गमन में ईश्वर की भूमिका को ऊपर उठाना। जिन भजनों पर हमने गौर किया है उनमें एक दोहराव वाला विषय है जिसके तहत मनुष्यों के कार्यों को नीचे धकेल दिया जाता है और न्यूनतम कर दिया जाता है और भगवान के कार्यों को ऊंचा कर दिया जाता है। वह प्रत्यक्ष नियंत्रण में इतना अधिक हो जाता है।

वह विपत्तियाँ भेजता है। वह लोगों को आज़ाद करता है। वह समुद्र को विभाजित करता है।

यह अब मूसा और उसके कर्मचारियों के बारे में नहीं है। यह मूसा और हारून के फिरौन के पास जाकर यह कहने के बारे में नहीं है कि मेरे लोगों को अन्यथा जाने दो। यह ईश्वर द्वारा कार्रवाई करने और सीधे पानी और रेगिस्तान में सृष्टि के साथ-साथ लोगों के साथ टकराव के बारे में है।

फिर संभवतः सबसे महत्वपूर्ण बिंदु जिस पर पहले चर्चा की गई है वह यह है कि इसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए तैयार किया गया है। इसके द्वारा, मैं वास्तव में यह सब इस बात पर जोर देकर खत्म करना चाहता हूं कि जब हम उन भजनकारों को देख रहे हैं जो निर्गमन के मूल भाव से निपटते हैं, तो हम उन लोगों से निपट रहे हैं जो इसे विशिष्ट उद्देश्यों के लिए तैयार करते हैं। इसका मूलतः मतलब यह है कि जब हम भजनकारों के बारे में बात करते हैं, तो हम गीतकारों के बारे में इतनी बात नहीं कर रहे हैं, बल्कि हम बाइबिल व्याख्याओं के बारे में बात कर रहे हैं।

हम उन लोगों के बारे में बात कर रहे हैं जो बाइबिल व्याख्या कर रहे हैं। वे एक कथा पढ़ रहे हैं और वे उस कथा को ले रहे हैं और वे इसे एक विशेष बिंदु को पढ़ाने के लिए विशिष्ट उद्देश्यों के लिए काम में ला रहे हैं। मुझे लगता है कि भजनहार के इस काम को आम तौर पर कम महत्व दिया गया है।

हम उन्हें केवल गीतकार मानते हैं। हम उनके बारे में ऐसे लोगों के रूप में सोचते हैं जो हाथों में वीणा लिए एक पहाड़ी पर बैठे हैं, सुंदर संगीत लिख रहे हैं और पक्षियों को सुन रहे हैं और सब कुछ अपने अंदर समाहित कर रहे हैं। लेकिन वास्तव में हमें भजनहार के बारे में उन लोगों के रूप में सोचना चाहिए जो पुस्तकों के साथ पुस्तकालय में बैठे हैं उनके सामने जो इब्राहीम की कहानियाँ, निर्गमन की कहानियाँ खोल रहे हैं।

वे इन चीजों को एक साथ ले जा रहे हैं और वे उन्हें एक ऐसे संदेश में बदल रहे हैं जो उनके दर्शकों के लिए अद्वितीय है। तो यहीं पर मैं समाप्त करता हूं। मुझे आशा है कि आपको यह संक्षिप्त प्रस्तुति पसंद आयी होगी।

यदि कुछ और है, तो इस सब से आप कुछ और नहीं लेते हैं, यह याद रखना बहुत महत्वपूर्ण है कि भजनकार एक बाइबिल व्याख्याकार है।

यह निर्गमन स्तोत्रों पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड एमानुएल हैं। यह सत्र संख्या पाँच, भजन 135, प्रभु की सर्वोच्चता है।